भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 360
28/11/2024 को उत्तर दिए जाने के लिए

डॉपलर मौसम रडार

360. डा. अशोक कुमार मित्तल:

क्या **पृथ्वी विज्ञान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या पूर्वोत्तर राज्यों और हिमाचल प्रदेश में 10 एक्स-बैंड डॉपलर मौसम रडार (डीडब्ल्यूआर) की स्थापना में देरी हुई है, और यदि हां,तो ऐसी देरी के क्या कारण हैं;

(ख) क्या इन क्षेत्रों में मौसम निगरानी के लिए मौजूद अवसंरचनाएं चरम मौसम की घटनाओं की सटीक भविष्यवाणी करने के लिए पर्याप्त नहीं हैं, यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं;

(ग) इन क्षेत्रों में आपदा संबंधी जागरूकता में सुधार के लिए रडार स्थापना सहित उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है, और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं; और

(घ) इन रडारों की स्थापना का कार्य पूरा होने की अपेक्षित समय-सीमा क्या है, और सरकार इन संवेदनशील क्षेत्रों में उनके प्रभावी रखरखाव और उपयोग को कैसे सुनिश्चित करेगी?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(डॉ. जितेंद्र सिंह)

(क) पूर्वोत्तर राज्यों में 10 एक्स-बैंड डॉपलर मौसम रेडार (DWR) की स्थापना तय समय के अनुसार हो रही है। हालाँकि, हिमाचल प्रदेश के मुरारी देवी और जोत में एक्स-बैंड डॉपलर मौसम रेडार की स्थापना में महामारी के कारण समयसीमा में थोड़ी देरी का सामना करना पड़ा। साथ ही, चूंकि हिमाचल प्रदेश में ये दोनों स्थल वन भूमि वाले थे, इसलिए मंजूरी प्रक्रिया काफी लंबी थी, जिसमें वन विभाग से चरण-1 और चरण-2 की मंजूरी और माननीय सर्वोच्च न्यायालय से अंतिम मंजूरी शामिल थी, जिसमें कुछ महीने लग गए।

(ख) जी नहीं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (IMD) ने सतह, उपरितन वायु, स्वचालित मौसम स्टेशन (AWS), स्वचालित वर्षामापी स्टेशन (ARGs), DWRs आदि सहित प्रेक्षण नेटवर्क स्थापित किया है। भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां उपग्रह प्रेक्षण से लगातार पूर्वोत्तर राज्यों और हिमाचल प्रदेश सहित भारतीय क्षेत्र में निर्बाध मौसम की जानकारी प्रदान करते हैं। इसके अलावा, IMD सटीक मौसम विश्लेषण और उच्च-विभेदन संख्यात्मक मौसम पूर्वानुमान (NWP) मॉडलिंग के लिए सभी प्रेक्षणों का उपयोग करता है ताकि सभी समय पैमानों को कवर करने वाले निर्बाध पूर्वानुमान तैयार किए जा सकें।

(ग) आईएमडी विभिन्न प्लेटफार्मों/चैनलों के माध्यम से आवश्यक तैयारियों और शमन उपायों का समर्थन करने के लिए प्रचंड मौसम की जानकारी और पूर्व चेतावनियों को आपदा प्रबंधन अधिकारियों और आम जनता के साथ साझा करने के लिए अत्याधुनिक प्रसार प्रणाली का उपयोग करता है। इसमें सोशल मीडिया, कॉमन अलर्ट प्रोटोकॉल, मोबाइल ऐप, व्हाट्सएप और एपीआई शामिल हैं। परिणामस्वरूप, असुरक्षित आबादी को समय पर क्षति प्रवण क्षेत्रों से सुरक्षित स्थान पर पहुंचा दिया जाता है, जिससे मानव मृत्यु दर न्यूनतम हो जाती है।

(घ) पूर्वोत्तर क्षेत्र और हिमाचल प्रदेश में 10 डॉपलर मौसम रेडार स्थापित किए जाने की अपेक्षित समय सीमा अक्टूबर 2026 तक है। इन सभी डॉपलर मौसम रेडारों को विक्रेता से 3 साल की वारंटी और दूरदराज के क्षेत्रों में भी इन उच्च-स्तरीय प्रणालियों के प्रभावी और समय पर रखरखाव के लिए सात साल के व्यापक वार्षिक रखरखाव अनुबंध के साथ खरीदा जा रहा है। प्रशिक्षित अधिकारी और आईएमडी कर्मचारी इन डॉपलर मौसम रेडारों का संचालन करेंगे।

*****